Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
June 2024 5(6), 592–594

A GREAT POET, THINKER AND LITERARY FIGURE OF HINDI LITERATURE: SUMITRANANDAN PANT

हिंदी साहित्य के एक महान, विचारक और साहित्यकार कवि: सुमित्रानंदन पंत

Mamta Sharma [1]

[1] Assistant Professor, Hindi Department Government College, Narnaul, Haryana, India

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i6.2024.4165

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

ABSTRACT

English: This study is based on the life and literary contribution of Sumitranandan Pant, a leading poet of the Chhayavaad (Symbolism) movement in Hindi literature. Born in 1900 in Kausani village of Uttarakhand, Pant's poetic journey spanned almost six decades (1916-1977). His poetic development can be divided into three major phases: the first phase was of Chhayavaad poetry, the second phase was of progressive poetry influenced by Marxism and Freudism, and the third phase was inspired by spirituality and philosophical ideas. Pant's major poetry collections include Veena, Pallava, Yugantar, Chidambara, and Rajat Shikhar. He was awarded prestigious awards like Sahitya Akademi Award and Jnanpith Award. This study focuses on his poetic inclinations, intellectual influences and literary legacy. In addition, Pant's house has been converted into the 'Sumitranandan Pant Sahitya Vithika' museum in Kausani, where his personal belongings and handwritten manuscripts have been preserved. Through this study an attempt has been made to understand Pant's literary contribution and his wide-reaching influence.

Hindi: यह अध्ययन हिंदी साहित्य में छायावाद (सिंबोलिज़म) आंदोलन के प्रमुख कवि सुमित्रानंदन पंत के जीवन और साहित्यिक योगदान पर आधारित है। 1900 में उत्तराखंड के कौसानी गाँव में जन्मे पंत की काव्य-यात्रा लगभग छह दशकों तक फैली रही (1916-1977)। उनके काव्य-विकास को तीन प्रमुख चरणों में विभाजित किया जा सकता है: पहला चरण छायावादी काव्य का था, दूसरा चरण मार्क्सवाद और फ्रायडवाद से प्रभावित प्रगतिवादी काव्य का, और तीसरा चरण अध्यात्मिकता और दार्शनिक विचारों से प्रेरित था। पंत के प्रमुख काव्य-संग्रहों में वीणा, पल्लव, युगांतर, चिदंबरा, और रजत शिखर शामिल हैं। उन्हें साहित्य अकादेमी पुरस्कार और ज्ञानपीठ पुरस्कार जैसे प्रतिष्ठित पुरस्कारों से नवाजा गया। इस अध्ययन में उनके काव्य-प्रवृत्तियों, बौद्धिक प्रभावों और साहित्यिक धरोहर पर ध्यान केंद्रित किया गया है। इसके अलावा, पंत के घर को कौसानी में 'सुमित्रानंदन पंत साहित्यिक वीथिका' संग्रहालय के रूप में परिवर्तित किया गया है, जहाँ उनकी व्यक्तिगत वस्तुएं और हस्तलिखित पांडुलिपियाँ संरक्षित की गई हैं। इस अध्ययन के माध्यम से पंत के साहित्यिक योगदान और उनके व्यापक प्रभाव को समझने का प्रयास किया गया है।

1. प्रस्तावना

सुमित्रानंदन पंत आधुनिक हिंदी कविता के प्रमुख कवि रहे हैं, जिनकी काव्यशक्ति प्रकृति, मानव भावनाओं और आत्मिक आस्थाओं से गहरे रूप से जुड़ी हुई थी। उत्तराखंड के कौसानी गाँव में जन्मे पंत का जीवन व्यक्तिगत दुखों से भरा हुआ था, जिससे उनकी काव्य-चेतना पर गहरा प्रभाव पड़ा। उन्होंने प्रयाग (इलाहाबाद) में शिक्षा प्राप्त की, जहाँ उनकी साहित्यिक यात्रा की शुरुआत हुई और वे छायावाद आंदोलन के प्रमुख हस्ताक्षर बने, जिसने प्रतीकवाद और रहस्यवाद के माध्यम से आंतरिक जगत को व्यक्त किया। पंत की काव्य-यात्रा को तीन प्रमुख चरणों में विभाजित किया जा सकता है। 1916-1935 तक का पहला चरण छायावादी काव्य का था, जिसमें उन्होंने प्राकृतिक सौंदर्य और रहस्यवाद को व्यक्त किया। दूसरे चरण में, जब पंत मार्क्सवादी और फ्रायडियन विचारों से प्रभावित हुए, उनका काव्य सामाजिक यथार्थ और मनुष्य की जटिलताओं को उजागर करने की ओर बढ़ा।

तीसरे और अंतिम चरण में, वे अधिक आध्यात्मिक और दार्शनिक दृष्टिकोण की ओर अग्रसर हुए, विशेषकर श्री अरविंद के विचारों से प्रभावित होकर। पंत केवल काव्य तक ही सीमित नहीं रहे, बल्कि उन्होंने नाटक, उपन्यास, निबंध और अनुवाद के क्षेत्र में भी योगदान दिया। उनके प्रमुख काव्य-संग्रहों जैसे युगांतर, चिदंबरा, और रजत शिखर ने उन्हें साहित्यिक प्रतिष्ठा दिलाई। उन्हें साहित्य अकादेमी पुरस्कार और ज्ञानपीठ पुरस्कार जैसे सम्मान प्राप्त हुए। उनका साहित्यिक योगदान आज भी जीवित है, और कौसानी में उनके घर को संग्रहालय में परिवर्तित किया गया है, जहाँ उनकी स्मृति को संजोने के लिए हर वर्ष 'पंत व्याख्यान माला' का आयोजन किया जाता है। यह अध्ययन पंत के साहित्यिक विकास, उनके विचारों और उनके द्वारा हिंदी साहित्य को दिए गए योगदान को समझने का एक प्रयास है, जो न केवल उनके समय के समाज और संस्कृति को व्यक्त करता है, बल्कि उनके विचारों और लेखन से आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करता है।

2. उसका जीवन और कृतियाँ

'प्रकृति के सुकुमार कवि' सुमित्रानंदन पंत का जन्म 20 मई 1900 को बागेश्वर जिले के कौसानी (जो वर्तमान में उत्तराखंड में है) में हुआ। जन्म के कुछ घंटे बाद ही उनकी माता का निधन हो गया और उनका पालन-पोषण उनकी दादी ने किया। बचपन में उनका नाम गोसाईं दत्त रखा गया था। प्रयाग में उच्च शिक्षा के दौरान 1921 में महात्मा गांधी के असहयोग आंदोलन में भाग लेते हुए उन्होंने महाविद्यालय छोड़ दिया और हिंदी, संस्कृत, बांग्ला और अंग्रेजी साहित्य का स्वाध्याय करने लगे। 'युगांतर', 'स्वर्णकिरण', 'कला और बूढ़ा चाँद', 'सत्यकाम', 'मुक्ति यज्ञ', 'तारापथ', 'मानसी', 'युगवाणी', 'उत्तरा', 'रजतशिखर', 'शिल्पी', 'सौवर्ण', 'पतझड़', 'अवगुंठित', 'मेघनाद वध' आदि उनके अन्य महत्वपूर्ण काव्य-संग्रह हैं। 1958 में 'चिदंबरा' संग्रह प्रकाशित हुआ, जिसमें 1937 से 1950 तक की रचनाएँ संकलित हैं। कविताओं के अलावा, उन्होंने नाटक, उपन्यास, निबंध और अनुवाद के क्षेत्र में भी योगदान दिया है।

उनकी काव्य-चेतना का विकास प्रयाग में हुआ, हालांकि वह किशोरावस्था से ही कविताएँ लिखने लगे थे। उनका रचनाकाल 1916 से 1977 तक लगभग 60 वर्षों तक फैला हुआ है। उनकी काव्य-यात्रा को तीन चरणों में विभाजित किया जा सकता है। 1916-35 तक का पहला चरण छायावादी काव्य का है, इस दौरान उनके संग्रह 'वीणा', 'ग्रंथि', 'पल्लव', 'गुंजन' और 'ज्योत्स्ना' प्रकाशित हुए। 'पल्लव' छायावादी सर्जनात्मकता का सर्वोत्तम उदाहरण माना जाता है और इसे उनकी प्रतिभा का सर्वोत्तम प्रस्फुटन माना जाता है। दूसरा चरण प्रगतिवादी काव्य का है, जब मार्क्स और फ्रायड के प्रभाव से वह सौंदर्य-चेतना से बाहर निकलकर आम आदमी की पहचान की ओर अग्रसर हुए। इस समय उनके 'युगांत', 'गुण-वाणी' और 'ग्राम्या' संग्रह प्रकाशित हुए। तीसरे चरण में वह अध्यात्मवाद की ओर मुड़े, जब वे अरविंद दर्शन के प्रभाव में आए। इस चरण में उनके संग्रह 'स्वर्ण-धूलि', 'अतिमा', 'रजत शिखर' और 'लोकायतन' प्रकाशित हुए, जिसमें वह अध्यात्मिक विचारों की गहराई में खो गए। उन्हें 1960 में 'कला और बूढ़ा चाँद' काव्य-संग्रह के लिए साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त हुआ और 1968 में 'चिदंबरा' काव्य-संग्रह के लिए उन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया। भारत सरकार ने उन्हें पद्मभूषण से नवाज़ा और उनके सम्मान में डाक टिकट भी जारी किया। कौसानी गाँव स्थित उनके घर को 'सुमित्रा नंदन पंत साहित्यिक वीथिका' नामक संग्रहालय में परिवर्तित कर दिया गया है, जहाँ उनकी व्यक्तिगत वस्तुएँ, प्रशस्तिपत्र, और विभिन्न संग्रहों की पांडुलिपियाँ संरक्षित हैं। संग्रहालय में हर वर्ष उनकी याद में 'पंत व्याख्यान माला' का आयोजन भी किया जाता है।

3. निष्कर्ष

सुमित्रानंदन पंत हिंदी साहित्य के एक महान कवि, विचारक और साहित्यकार रहे हैं, जिन्होंने अपनी काव्य-यात्रा के माध्यम से न केवल साहित्यिक जगत को समृद्ध किया, बल्कि अपने समय के सामाजिक, राजनीतिक और आध्यात्मिक परिवर्तनों को भी शब्दों के माध्यम से प्रस्तुत किया। उनकी कविता में प्रकृति, मानवता, और आध्यात्मिकता की गहरी छाप है, जो उन्हें अपने समकालीन कवियों से विशिष्ट बनाती है। पंत का साहित्य न केवल सुंदरता और रहस्यवाद को प्रस्तुत करता है, बल्कि वह मानवीय संघर्षों, सामाजिक मुद्दों और आत्मिक उन्नति की दिशा में भी पाठकों को प्रेरित करता है। पंत की काव्य-यात्रा को तीन प्रमुख चरणों में विभाजित किया जा सकता है: पहला चरण, जो छायावाद का था, जिसमें उन्होंने प्रकृति और भावनाओं की अति संवेदनशीलता को अपनी कविता का विषय बनाया। दूसरा चरण, जिसमें पंत ने समाजवादी विचारधारा, मार्क्स और फ्रायड के सिद्धांतों से प्रेरित होकर सामाजिक यथार्थ और मनुष्य के अस्तित्व की जटिलताओं को अपनी कविता में उकेरा। तीसरा चरण, जो उनके आध्यात्मिक विचारों और श्री अरविंद के दर्शन से प्रभावित था, जिसमें उनकी कविता ने उच्च आध्यात्मिकता, ब्रह्मा और आत्मा के संबंध को व्यक्त किया। उनकी रचनाएँ जैसे वीणा, पल्लव, युगांतर, चिदंबरा और रजत शिखर आज भी साहित्यिक धरोहर के रूप में महत्वपूर्ण मानी जाती हैं।

पंत को साहित्य अकादेमी पुरस्कार (1960) और ज्ञानपीठ पुरस्कार (1968) जैसे प्रतिष्ठित सम्मान प्राप्त हुए, जो उनके साहित्यिक योगदान की प्रामाणिकता और महत्व को दर्शाते हैं। उनके रचनात्मक योगदान ने उन्हें न केवल हिंदी साहित्य में, बल्कि भारतीय साहित्य में एक महत्वपूर्ण स्थान दिलाया। सुमित्रानंदन पंत का साहित्य केवल उनकी कविताओं तक सीमित नहीं था, बल्कि उनके निबंध, नाटक और अनुवाद भी उनकी बहुआयामी साहित्यिक प्रतिभा का परिचय देते हैं। पंत का जीवन और कार्य भारतीय साहित्य के उन उज्जवल सितारों में से एक है, जिन्होंने हिंदी कविता को न केवल आधुनिकता की दिशा में अग्रसर किया, बल्कि उसे आध्यात्मिक और सामाजिक चेतना से भी जोड़ने का प्रयास किया। उनकी जीवन-यात्रा और कृतियाँ हमें यह सिखाती हैं कि साहित्य न केवल समाज के विभिन्न पहलुओं को उजागर करने का एक माध्यम है, बल्कि यह मानवीय जीवन के गहरे

अर्थ और उद्देश्यों की तलाश में भी सहायक हो सकता है। पंत के जीवन और उनके साहित्यिक योगदान को याद करते हुए यह कहा जा सकता है कि उन्होंने न केवल अपनी पीढ़ी को, बल्कि आने वाली पीढ़ियों को भी विचार और संवेदना के नए आयाम दिए हैं।

संदर्भ

पंत, सुमित्रानंदन. काव्यवृत्त: सुमित्रानंदन पंत. साहित्य अकादेमी, 2023.

शर्मा, रामचंद्र. सुमित्रानंदन पंत: जीवन और काव्य. हिंदी साहित्य प्रकाशन, 2024.

गुप्ता, नरेंद्र. "सुमित्रानंदन पंत की काव्य-यात्रा". हिंदी साहित्य समीक्षा, अंक 14, 2023.

सुमित्रानंदन पंत: साहित्यिक धरोहर, कौसानी, उत्तराखंड. 2023